मोमबत्तियां और कोट

जोनाथन उस परेशान औरत और उसके बेटे के साथ उनके रिश्तेदारों के घर तक गया जो कुछ मील दूर था। उन्होंने जोनाथन का काफी गर्मजोशी से धन्यवाद दिया और अपने घर में रुकने का न्यौता दिया। घर पर एक नज़र डालते ही उसे अंदाज़ा हो गया था कि उसमें मुश्किल से घर के लोगों के ठहरने के लिए ही जगह थी, इसलिए उसने वहां से आगे बढ़ना ही ठीक समझा।

वह सड़क उसे एक नदी तक ले गई। उस नदी पर एक पुल था जिसका दूसरा सिरा दीवारों से घिरे एक शहर को जाता था। वह संकरा सा पुल दो हिस्सों में बंटा था। पुल के एक ओर लगे बोर्ड पर लिखा था " स्ट्रल्टा शहर में प्रवेश करें, कोरंपो द्वीप"। पुल के दूसरे हिस्से में लिखा था, " यह रास्ता केवल बाहर निकलने के लिए है, इससे प्रवेश न करें"

यह पुल बहुत ही अजीब था। शहर के अंदर जाने के लिए रास्ते को बहुत ही मुश्किल बनाया गया था। पुल के प्रवेश वाले हिस्से में नुकीली चट्टानों के ढेर और बड़े-बड़े पत्थर डाल कर आगे निकलना बहुत ही मुश्किल किया गया हुआ था। इतने कठिन रास्ते की वजह से बहुत से यात्री अपना सामान रास्ते में ही छोड़ दे रहे थे या नदी में फेंक रहे थे। सामान के साथ इतनी बाधाओं वाला रास्ता पार करना उनके लिए मुश्किल पड़ रहा था। कुछ दूसरे यात्री खास तौर से बुर्जुग पुल से ही वापस लौट जा रहे थे। जोनाथन ने कटे कान वाली पीली धारीदार बिल्ली को एक कमज़ोर से आदमी के पीछे जाते देखा। वह वहां गिराए एक बंडल को उलट-पलट कर सूंघ रही थी। जोनाथन ने देखा कि उसने बंडल में से सूखे मांस का टुकड़ा अपने लिए निकाल लिया था।

पुल का दूसरा हिस्सा यानि शहर से बाहर निकले का रास्ता बहुत ही आसान था। शहर से आने वाले व्यापारी आसानी से सामान के साथ पुल पार करके इस ओर आ रहे थे। जोनाथन को समझ नहीं आ रहा था कि " आखिर इन्होंने शहर के अंदर जाना मुश्किल क्यों बनाया है जबकि निकलना इतना आसान है?"

जोनाथन पुल के ऊपर चढ़ा, रास्ते की मुश्किलों को जैसे-तैसे पार करके वह एक गेट के पास पहुंचा। लकड़ी के बड़े-बड़े दरवाजों वाला वह गेट पूरा खुला हुआ था। गेट के पार शहर के अंदर सड़कों पर लोग घोड़ों पर चढ़े थे, कुछ बक्से और बंडल वगैरह ले जा रहे थे। लोग हर तरह की गाड़ियां चला रहे थे। जोनाथन ने अपने कंधे सीधे किए, अपनी फटी कमीज और पेंट को झाड़ कर धूल साफ की और गेट पार करके शहर में प्रवेश कर गया। वह बिल्ली भी उसके पीछे थी।

अंदर घुसते हुए ही जोनाथन को एक औरत मिली। उसने एक मुड़ा पार्चमेंट पकड़ा हुआ था और वह एक मेज के पीछे बैठी थी जिस पर छोटे-छोटे चमकीले पदक रखे थे।
जोनाथन को देखते हुए उस औरत ने चमकती मुस्कराहट के साथ एक पदक उठा कर उसकी कमीज पर लगाते हुए पूछा, " क्या आप मेरी याचिका पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे?"
" पता नहीं....कुछ अटकते हुए जोनाथन ने कहा। " लेकिन क्या आप मुझे शहर के मुख्य इलाके की ओर जाने का रास्ता बताएंगी?"
औरत ने शक भरी आंखों से उसे घूरते हुए पूछा, " तुम शहर के बारे में नहीं जानते?"
औरत के बदलते तेवर को महसूस करते हुए जोनाथन जल्दी से बोला, "मुझे कहां हस्ताक्षर करने होंगे याचिका में?"
वह फिर से मुस्कराने लगी और बोली, "यहां लिखे आखिरी नाम के ठीक नीचे यहां पर हस्ताक्षर कर दीजिए। ऐसा करके तुम बहुत सारे लोगों की मदद कर रहे हो।"
जोनाथन ने अपने कंधे झटकाए और उससे पेन ले लिया। उसे उस औरत पर दया आ रही थी, बेचारी उस सुहावने धूप वाले दिन भारी-भरकम कपड़ों से लदी हुई बुरी तरह पसीना बहा रही थी।

" लेकिन ये याचिका है किसके लिए?" जोनाथन ने पूछा।

उस औरत ने दोनों हाथ आगे की ओर बांध कर खड़ी हो गई जैसे कोई गाना गाने जा रही हो। "यह याचिका लोगों के लिए रोजगार व उद्योगों की सुरक्षा के लिए है। निश्चित तौर पर तुम इसका सर्मथन करते होगे? उसने पूछा।

" बिल्कुल, मैं इसके पक्ष में हूं, जोनाथन ने जवाब दिया। उसे वह औरत याद आई जिसे पेड़ काटने वालों की नौकरी के लिए खतरा पैदा करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। वह नहीं चाहता था कि कोई यह सोचे कि वह लोगों के लिए रोजगार का समर्थन नहीं करता।

" लेकिन इस याचिका से इसमें क्या मदद मिलेगी?" जोनाथन याचिका पर अपना नाम इतनी बुरी तरह से लिख रहा था जिससे कोई भी उसे पढ़ न सके।

" अधिकारियों की परिषद बाहर से आने वाले सामान से हमारे स्थानीय उद्योगों को बचाती है, वह बाहर से सामान को आने से रोकती है जिससे केवल हमारे उद्योगों का सामान ही बाज़ार में बिके। जैसा कि तुमने देखा ही होगा हमने शहर में घुसने का रास्ता कठिन बना कर बाहर से सामान आना मुश्किल कर दिया है, फिर भी अभी बहुत कुछ और किया जाना बाकी है। अधिकारियों की परिषद ने मुझसे वादा किया है कि अगर बहुत सारे लोग मेरी याचिका पर हस्ताक्षर कर देंगे तो वे मेरे उद्योग को नुकसान पहुंचाने वाली विदेशी वस्तुओं पर रोक लगा देंगे।

"तुम्हारा उद्योग क्या है?"

वह औरत बड़े गर्व से बोली," मैं मोमबत्ती और कोट बनाने वाले उद्योग की प्रतिनिधि हूं। इस याचिका के जरिए हमने सूरज पर रोक लगाने की मांग की है।"

" सूरज??" जोनाथन भौचक्का रह गया उस औरत की बात पर। " लेकिन कैसे.....मगर सूरज पर रोक क्यों?"

" मैं जानती हूं कि यह बात सुनने में कुछ ज़्यादा ही लग रही है, लेकिन सोच कर देखो ज़रा...सूरज मोमबत्ती और कोट दोनों ही उद्योगों को नुकसान पहुंचाता है। सूरज की रोशनी व गर्मी की वजह से लोग मोमबत्ती या कोट नहीं खरीदते। तुम इस बात को समझ रहे होगे कि सूरज विदेशी रोशनी व गर्मी का सस्ता स्रोत है। हम इस बात को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

" लेकिन सूरज से मिलने वाली गर्मी और रोशनी तो सबको मुफ्त में मिलती है," जोनाथन ने उसकी बात काटते हुए कहा।

ऐसा लगा जोनाथन की बात से औरत को चोट पहुंची हो वह खीझ कर बोली," यही तो मुश्किल है, क्या तुम्हें पूरी बात समझ नहीं आ रही?" वह एक कागज़ और पेन निकाल कर जोनाथन को लिख कर समझाने की कोशिश करने लगी," देखो, मेरी गणना के हिसाब से सस्ते में उपलब्ध इन स्रोतों की वजह से रोजगार के अवसर और लोगों को मिलने वाले वेतन में पचास प्रतिशत की कमी आती है। यह आंकड़े उन उद्योगों के हैं जिनकी मैं प्रतिनिधि हूं। लोगों को खिड़कियां लगाने पर भारी टैक्स लगा कर या खिड़कियां लगाने पर पूरी तरह से रोक लगा कर उद्योग की स्थिति को काफी बेहतर किया जा सकता है।

जोनाथन ने याचिका नीचे रख दी। " लेकिन अगर रोशनी व गर्मी के लिए पैसे देंगे तो उनके पास मीट, शराब या रोटी जैसी दूसरी चीज़ों पर खर्च करने के लिए पैसे नहीं बचेंगे।"

"मैं मीट बेचने वाले कसाई, शराब बनाने वाले या बेकरी उद्योग की प्रतिनिधि नहीं हूं," उस औरत ने जवाब दिया। उसे लगने लगा था कि जोनाथन उससे सहमत नहीं है, इसलिए उसने जल्दी से याचिका अपने हाथ में ले ली। उसने जोनाथन को धिक्कारते हुए से कहा," मुझे लगता है कि तुम रोजगार की सुरक्षा और व्यापार निवेश की बजाय उपभोक्ताओं के हित जैसी बातों के पक्षधर हो। "तुम्हारा दिन अच्छा हो" कहते हुए उस औरत ने बातचीत खत्म कर दी।

जोनाथन वहां से हट कर आगे बढ़ते हुए सोच रहा था, " सूरज पर रोक?" "क्या बेवकूफी भरी बातें हैं!" पहले तो कुल्हाड़ी से लकड़ी काटने और अधिक अनाज उगाने पर सज़ा देने के नियम और अब सूरज पर रोक लगाने की बात। पता नहीं आगे चल कर और क्या जानने को मिलेगा?"

विचार-विमर्श

◦ क्या सूरज से मुफ्त में रोशनी और गर्मी लेना लोगों के लिए अच्छा है?
◦ इसमें कौन आपत्ति करता है?
◦ क्या आयात पर की जाने वाली आपत्तियां भी ऐसी ही होती हैं?
◦ कौन से समूह लोगों को विदेशों से आयात होने वाली सस्ती चीज़ों को खरीदने पर आपत्ति करते हैं?
◦ उनके आपत्ति करने की वजह क्या हैं?
◦ जब आयात पर रोक लगती है तो क्या उपभोक्ताओं को नुकसान उठाना पड़ता है?
◦ आपत्ति करने वाले समूह कम लागत वाली चीज़ों के आयात पर किस तरह से रोक लगाते हैं?
◦ इसके उदाहरण क्या हैं?
◦ कौन से नीतिगत मुद्दे इससे जुड़े हुए हैं?

व्याख्या

इस अध्याय का शीर्षक मोमबत्ती बनाने वालों के बारे में लिखे गए फ्रेडरिक बैस्टिएट के प्रसिद्ध निबंध के संदर्भ में है। मोमबत्ती निर्माता सूरज से आने वाली रोशनी और गर्मी पर रोक लगाना चाहते थे जिससे वे अपने देश के उद्योग को बचाने के लिए बाज़ार में मोमबत्ती की अवास्तविक मांग को बनाए रख सकें।

आयात: सरकार विदेशियों के नफे-नुकसान को ध्यान में रख कर आयात पर रोक नहीं लगाती। आयात पर रोक लगा कर वह अपने उपभोक्ताओं को घटिया सामान महंगे दाम पर खरीदने को बाध्य करती है। स्थानीय उद्योग द्वारा बनाई गई चीज़ों का दाम अधिक होने के कारण उपभोक्ता पैसे की बचत भी नहीं कर सकते जिसका इस्तेमाल वे दूसरी चीज़ें खरीदने में कर सकते थे। इस तरह से नए उद्योगों में रोजगार के अवसर भी सीमित बने रहते हैं।

अगर किसी के पास पांच सिक्के हैं और वह एक सिक्का खर्च कर कोई आयातिक चीज़ खरीद सकता है तो उसके पास चार सिक्के बचते हैं जिनका इस्तेमाल वह दूसरी चीज़ें खरीदनें में कर सकता है। लेकिन अगर आयात पर रोक लगी हो तो उस व्यक्ति को स्थानीय उद्योग द्वारा तैयार वह

चीज़ खरीदने के लिए पूरे पांच सिक्के खर्च करने पड़ेंगे। अब उसके पास दूसरी और चीज़ें खरीदने के लिए सिक्के नहीं बचेंगे।

आयात पर रोक लगाने के समर्थन में तर्क दिया जाता है कि सरकार घरेलू उद्योग व स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर सुरक्षित रखने के लिए यह देशभक्तिपूर्ण कदम उठाती है। बहरहाल जब तक लोगों की नौकरियों को इस तरह से सुरक्षित रखने के प्रयास किए जाते रहेंगे तब तक वे आत्मनिर्भर नहीं हो सकते, उन्हें हमेशा ही सुरक्षा की जरूरत रहेगी। जब तक बाज़ार में प्रतियोगिता का माहौल नहीं होगा कंपनियों के काम में कभी सुधार नहीं होगा। अगर कोई कंपनी प्रतियोगिता में टिकी नहीं रह पाती तो बजाय सरकारी सुरक्षा के उपायों पर निर्भर बनने के उसे अपनी पूंजी और कर्मचारियों का उपयोग किसी दूसरे कार्यक्षेत्र में करना चाहिए जहां वह दूसरी कंपनियों के मुकाबले बेहतर काम कर सकती है।

बदले की भावना के साथ किसी देश के साथ व्यापार पर रोक लगाना गलत है क्योंकि इससे निर्दोष जनता को ही नुकसान होता है। रोक लगाने वाले देश को इससे कोई फायदा नहीं होता क्योंकि सस्ते आयात को रोक कर वह अपने लोगों को महंगा सामान खरीदने को मजबूर करते हैं।

निर्यातः कभी किसी ने सोचा है कि देश से होने वाले निर्यात में कोई प्रतिस्पर्धा क्यों नहीं होती? निर्यात करने वाले देश द्वारा लगाए जाने वाले भारी कर और कठिन कायदे कानून इसकी मुख्य वजह है न कि विदेशों से मिलने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा।

घरेलू उद्योगों को सुरक्षित रखने का जिम्मा जब सरकार उठाती है तो उद्योग खुद को बाज़ार के प्रतियोगी माहौल के हिसाब बेहतर बनाने की कोशिश नहीं करते। ऐसे में उद्योग अपने फायदे के लिए ज़्यादा से ज़्यादा राजनेताओं की मेहरबानी पर निर्भर होते जाते हैं।

"अन्यायपूर्ण प्रतियोगिता" पर रोक लगा कर "रोजगार व उद्योग" को सुरक्षित करने का तर्क ऐसा ही है जैसे कि डंडी से मार-मार कर पेड़ काटने वाले कर्मचारियों के मुताबिक आरी से पेड़ काटना लोगों से रोजगार के अवसर छीनना है। जब मोमबत्ती और कोट बनाने वाले या पुराने तरीके से पेड़ काटने वालों के फायदे के लिए सरकार कानून बना देती है तब इसका नुकसान आम जनता को उठाना पड़ता है क्योंकि उन्हें चीज़ें महंगे दामों पर खरीदनी पड़ती है।

दरअसल इसका नुकसान उन्हें भी उठाना पड़ता हैं जिन्हें सरकारी सुरक्षा से किसी तरह का फायदा मिला हुआ होता है। सरकारी सुरक्षा देने की बजाय मुक्त व्यापार की नीतियां सभी के लिए फायदेमंद साबित होती हैं।

पृष्ठभूमि

यूरोप के इतिहास में एक समय ऐसा था जब खिड़कियों पर सचमुच कर देना पड़ता था। इस कर से बचने के लिए लोग अपनी खिड़कियों को बोर्ड से ढक देते थे या दीवार बना कर उसे पूरी तरह से बंद कर देते थे। बैस्टिएट की मोमबत्ती बनाने वालों की प्रसिद्ध याचिका से लिया गया एक अंश इस तरह से है, " हम मोमबत्ती निर्माता विदेशी शत्रु के सस्ते उत्पाद की वजह से अन्यायपूर्ण प्रतिस्पर्धा का नुकसान झेल रहे हैं। उसकी वजह से उपभोक्ताओं ने हमें छोड़ दिया है, अन्य संबंधित उद्योग भी इससे नुकसान में हैं।

" हमारा शत्रु सूरज है! कृपया एक कानून पास करें जिसमें सब लोगों को धूप की रोशनी वाले तमाम रास्तों जैसे खिड़की, छेद या दरार इत्यादि को बंद करना जरूरी कर दिया जाए। इससे घरेलू उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा मोमबत्ती बनाने के लिए जरूरी तेल की मांग को पूरा करने में कृषि क्षेत्र को भी फायदा होगा। व्हेल के तेल की जरूरत को पूरा करने में समुद्री जहाजों के व्यापार में भी तरक्की होगी और इससे सुरक्षा भी बढ़ जाएगी। इन सब क्षेत्रों में व्यापार बढ़ने से रोजगार के अवसर बढ़ेगें और इस तरह सबको फायदा होगा। हमने हमेशा अपने देश की सेवा की है और हम चाहते हैं कि हमारे हितों की रक्षा की जाए।" फ्रेडरिक बैस्टिएट, 1846

सोफिज्म्स के अध्याय 10 में बैस्टिएट लिखते हैं, "एक समय ऐसा भी था जब इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता था दो शहर स्ट्रूल्टा और प्यूएरा कहां हैं।" विस्तृत जानकारी के लिए देखें http://www.ecolib.org.

कहानी को आगे बढ़ाते हुए वह कहते हैं कि इन दोनों शहरों के बीच बहुत अधिक खर्च करके एक हाइवे बनाया। उसके बाद भारी-भरकम वेतन पर लोग नियुक्त किए गए थे जिनका काम था और अधिक खर्च करके उस रास्ते पर बाधाएं खड़ा करना, जिससे सीमा से अधिक व्यापार पर रोक लगाई जा सके।

संदर्भ

जुलाई 2001 में दि सोसायटी फॉर इंडिविजुअल लिबर्टी- http://www.isil.com ने फ्रांसीसी अर्थशास्त्री, राजनेता और लेखक फ्रेडरिक बैस्टिएट की जन्मशती मनाई। उनकी लिखी 75 पृष्ट की *दि लॉ* नामक किताब काफी विचारोत्तेजक है।

आर. डब्ल्यू. ग्रांट की *दि इनक्रेडिबल ब्रेड मशीन* में राजनीति के इतिहास व उसकी शक्तियों के बारे में विचार-विमर्श किया गया है। इसके अलावा जेम्स बोवॉर्ड की *दि फेयर ट्रेड* से भी संदर्भ लिए गए हैं।

आयात व निर्यात के बारे में एक बारह साल की लड़की के विचार जानने के लिए http://www.JonathanGullible.com/FreeMarketSugar देखिए।

बॉक्स1
जब वस्तुएं देशों की सीमाएं पार नहीं करती तब सेनाएं उन्हें पार करती हैं।
-------------फ्रेडरिक बैस्टिएट, 1850

बॉक्स2
व्यापार पर लगने वाले प्रतिबंध गरीब किसानों को धनवान बनने से रोकते हैं।
-------------अज्ञात

बॉक्स3
आप किसी भी काम का समर्थन कर रहे हों, वैश्वीकरण का विरोध करने से उसका समाधान नहीं होगा। मेरा विश्वास है कि गरीब इसलिए गरीब नहीं हैं क्योंकि वैश्वीकरण बहुत अधिक हो गया है बल्कि वे इसलिए गरीब हैं क्योंकि वैश्वीकरण बहुत ही कम हुआ है।
--------------कोफी अन्नान
संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव

बॉक्स4
जब हमारी अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे से जुड़ी होगीं तो हम आपस में लड़ेंगे नहीं।
---------------अज्ञात

बॉक्स5
दो व्यक्ति जब अपनी मर्ज़ी से एक-दूसरे के साथ संपत्ति का लेन-देन करते हैं तो इसमें दोनों का ही फायदा होता है वरना वे आपस में व्यापार करेंगे ही नहीं।
------------------जोनाथन के मार्गदर्शक सिद्धांत में से लिया गया अंश

बॉक्स6

राष्ट्रवाद, निषेध, व्यापार और विदेशी मुद्रा पर नियंत्रण, धन का अवमूल्यन इत्यादि के आर्थिक सिद्धांत ही युद्ध के कारण बनते हैं। अर्थव्यस्था को सुरक्षित रखने की नीतियां ही युद्ध का सिद्धांत होती हैं।

-----------लुडविग वॉन मिसेस